

ZUME सत्र 2 का वीडियो स्क्रिप्ट्स

आत्मिक अर्थव्यवस्था

इस सत्र में, हम परमेश्वर की आत्मिक व्यवस्था के बारे में बात करेंगे। इस टूटे विश्व में, लोग पुनर्जात महसूस करते हैं जब वे लेते हैं, ग्रहण करते हैं और जब उन्हें आस-पास के लोगों से ज्यादा मिलता है।

पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर अपने लोगों से कहते हैं—मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं, ना ही तुम्हारे तरीके मेरे तरीके हैं।

परमेश्वर अपने राज्य की व्यवस्था में बताते हैं - हमारा सम्मान इस बात में नहीं कि हमें क्या मिलता है—बल्कि हम क्या देते हैं। परमेश्वर कहते हैं—मैं तुम्हारा उद्धार करूँगा, और तुम एक आशीष होगे।

यीशु ने कहा है—लेने से अच्छा देना है। परमेश्वर हमें जो देते हैं, उसे देना और परमेश्वर की आशीषों को दूसरों को आशीष देना, यह आत्मिक श्वास की नींव है इसे हमने पहले सीखा है।

हम श्वास अंदर लेते हैं और परमेश्वर से सुनते हैं। हम श्वास बाहर छोड़ते और हमने जो सुना उसका पालन करते हैं तथा दूसरों को बताते हैं।

परमेश्वर ने हमसे जो कहा है उसका पालन करने और दूसरों को बताने में जब हम विश्वासयोग्य रहते हैं, तब वह और भी बातें बताने का वायदा करते हैं।

यीशु ने कहा है—जो कोई थोड़े में विश्वासी है वह बहुत में भी विश्वासी है।

ये गहरे अंतर्ज्ञान, महान आत्मियता और बहुतायत का जीवन जीने का मार्ग है जिसे जीने के लिए परमेश्वर ने हमें सृजा है। इस तरह से हम भले कार्य कर सकते हैं जिसे करने के लिए परमेश्वर ने योजना बनाई है।

यदि हमें परमेश्वर का महान प्रतिफल पाना है, तो हमें दो चीजों का अभ्यास करना जरूरी है, जिससे वह आशीषित करने का वायदा करते हैं।

हम अवश्य ही –

- आज्ञा मानें और बताएं
- करें और सिखाएं
- अभ्यास करें और दूसरों को बतायें

.. जो कुछ परमेश्वर हमसे करने के लिए कहते हैं।

यदि हम चाहते हैं कि अन्य लोग भी परमेश्वर से महान प्रतिफल पाएं, तो हमें उन्हें दिखाना पड़ेगा कि ये चीजें कैसे करनी हैं। यह शिष्य बनने और शिष्य बनाने का महत्वपूर्ण भाग है।

हमशिष्यऔरअगुएहैं

हमविद्यार्थीऔरशिक्षकहैं

हमआशीषितहैंऔरआशीषहैं

परमेश्वर नहीं चाहते कि हम आज्ञा मानने और दूसरों को बताने से पहले इन्हें जानने तक इंतजार करें। जो कभी नहीं होगा।

परमेश्वर यह आशा नहीं करते कि बढ़ने से पहले हम वयस्क हो जाएँ। वह चाहते हैं कि हम इसी वक्त बढ़ना शुरू करें।

परमेश्वर चाहते हैं जो हम जानते उसका पालन करें हैं और जो हमने सुना है उसे दूसरों को बतायें ।

और परमेश्वर चाहते हैं कि हम दूसरों को भी यही सिखाएं। जैसे आज्ञा मानना और परमेश्वर ने हमें जो करने के लिए कहा है उसे दूसरों को बताना। यह वयस्कता और वृद्धि का मार्ग है।